प्रथम विश्वयुद्ध के कारण

Course – M.A. History, Part – II, Paper – XVI ; Prepared by – Dr. P.K. Poddar

प्रथम विश्व युद्ध (1914–18)

मानव-जीवन के इतिहास में एक अत्यन्त ही विनाशकारी घटना हुई, यह एक अभिशाप बनकर आया और अपने पीछे एक करुण कहानी छोड़कर चला गया। सच पूछा जाय तो फ्रांस की 1789 ई० की राज्यक्रान्ति के बाद 1914 ई० का प्रथम विश्व युद्ध ही एक ऐसी घटना है जिसने विश्व के मानव मस्तिष्क को झकझोर डाला। विश्व युद्ध की घटनाओं से पूरा विश्व सशक्त रूप से प्रभावित हुआ। इस युद्ध के कारणों को मुख्यतः दो भागों में विभाजित किया जा सकता है – मौलिक एवं तात्कालिक कारण।

गुप्त संधियाँ (Secret Alliances)

प्रथम विश्व युद्ध का एक महत्वपूर्ण कारण गुप्त-संधियाँ थी जिसका जन्मदाता बिस्मार्क था। 1870-71 में जर्मनी के एकीकरण के बाद बिस्मार्क ने फ्रांस से एल्सास और लौरेन छीनकर फ्रांस को अपमानित और आहत कर दिया था। इससे बिस्मार्क को सदैव भय रहता था कि फ्रांस यूरोप में दूसरे राष्ट्रों से दोस्ती करके जर्मनी से बदला लेने की कोशिश करेगा। इसलिए बिस्मार्क फ्रांस को अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में एकाकी और मित्रविहीन रखने के लिए कूटनीतिक जाल बुनने लगा ~~इसलिए~~ बिस्मार्क ने 1879 ई० में द्वैध संधि (Dual Alliance) आस्ट्रिया के साथ किया। यद्यपि यह संधि रक्षात्मक थी, फिर भी संधि की शर्तें गुप्त थीं; अतः यूरोप में शंका का वातावरण व्याप्त हो गया। 1882 ई० में द्वैध-संधि में इटली को शामिल करके इसे त्रिवर्गीय संधि (Triple Alliance) बना दिया गया। फिर भी बिस्मार्क रूस की सदिच्छा नहीं खोना चाहता था और उसको फ्रांस से मिलने नहीं देना चाहता था; इसलिए उसने 1871, 1881 एवं 1887 ई० में रूस से संधि कर के उसको

अपने पक्ष में मिलाए रखा और फ्रांस को मित्रहीन रखा। परन्तु, 1890 ई० में उसके चांसलर के पद से हटने पर जर्मन सम्राट विलियम स्वयं विदेशनीति का संचालन करने लगा। उसमें योग्यता एवं दूरदर्शिता का अभाव था, फलतः फ्रांस ने 1894 ई० में रूस से मित्रता कर ली। इंगलैंड, जो ~~अभी~~ इस समय पृथकता की नीति अपनाए हुए था, जब उसने देखा कि यूरोप के महान् राज्य आपस में समझौता कर रहे हैं तो उसने अपने को अकेला देखा। अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए वह भी मित्रों की खोज में निकल पड़ा। उसने 1902 में जापान, 1904 में फ्रांस एवं 1907 में रूस के साथ समझौता कर लिया। फलस्वरूप एक दूसरे त्रिगुट (Triple Entente) का जन्म हुआ। इस प्रकार जर्मनी के ~~विरुद्ध~~ त्रिगुट के विरुद्ध एक दूसरा सशक्त गुट तैयार हो गया। इन संधियों के कारण समस्त यूरोप के महान् राष्ट्र दो भागों में बँट गए। एक ओर इंगलैंड, फ्रांस, रूस और जापान थे तो दूसरी ओर जर्मनी, आस्ट्रिया, इटली और टर्की थे। दोनों दल एक-दूसरे को घृणा और शंका की दृष्टि से देखते थे। ऐसी स्थिति में एक छोटी सी घटना भी युद्धाग्नि को प्रज्वलित करने के लिए चिनगारी का काम कर सकती थी। कूटनीतिक दृष्टि से यूरोप का दो विरोधी गुटों में विभाजन यूरोपीय शान्ति के लिए बड़ा खतरनाक सिद्ध हुआ। इसके कारण अन्तर्राष्ट्रीय कटुता आयी और अंततः युद्ध का विस्फोट हुआ। वास्तव में ये संधियाँ आधुनिक युग के लिए अभिशाप बनीं।

उग्रराष्ट्रीयता (Militant Nationalism)

उग्रराष्ट्रीयता भी प्रथम विश्वयुद्ध के लिए बहुत हद तक जिम्मेवार था। राष्ट्रवाद का उदय फ्रांस की क्रान्ति का एक परिणाम था। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में राष्ट्रवाद उग्र रूप धारण करने लगा और साम्राज्यवादी

मनोवृत्ति ने उसे और विकृत कर दिया। उग्र राष्ट्रीयता के दो पक्ष होते हैं। एक पक्ष में वह लाभदायक होती है और परतंत्र देशों को स्वतंत्र बनाती है। इटली और जर्मनी का एकीकरण इसी राष्ट्रीयता के कारण संभव हो सका। इसका दूसरा पक्ष विनाश लाता है। इसी के कारण विश्वयुद्ध हुआ। जिस समय इसका नशा किसी राष्ट्र पर चढ़ता है तो उसके व्यक्ति यह समझने लगते हैं कि संसार में वे सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति हैं। इस प्रकार की उग्र राष्ट्रीयता का नशा प्रथम विश्वयुद्ध के पूर्व जर्मनी, फ्रांस, इंगलैंड आदि शक्तिशाली देशों पर ही नहीं वरन् बाल्कन प्रायद्वीप के यूनान, सर्विया इत्यादि छोटे-छोटे देशों पर भी चढ़ चुका था और वे बृहत् यूनान, बृहत् बल्गेरिया तथा बृहत् सर्विया आदि के स्थान लेने लगे थे। जर्मनी और इटली के लोग अपने को सर्वाधिक श्रेष्ठ और सभ्य मानते थे। इंगलैंड और फ्रांस भी अपने को किसी देश से कम नहीं मानते थे। जर्मनी के राष्ट्रवादी फ्रांस के विरुद्ध थे और फ्रांस के राष्ट्रवादी जर्मनी का नामोनिशान मिटाना चाहते थे। वे 1871 ई० की अपमानजनक संधि को नहीं भूले थे। उग्र राष्ट्रीयता के उदय से बाल्कन क्षेत्र में समस्याएँ और जटिल हो गईं, क्योंकि बोस्निया और हर्जेगोविना आस्ट्रिया को दे दिया गया जिसमें सर्व जाति के लोग रहते थे और इस सन्दर्भ में सर्विया के दावे को ठुकरा दिया गया। उसी तरह बुल्गर, चेक, पोल आदि जातियाँ भी अपने स्वतंत्र राष्ट्र की कामना करती थीं। अंततः उग्र राष्ट्रीयता का अहंकार खतरनाक सिद्ध हुआ। अपने को श्रेष्ठ एवं अधिक सभ्य सिद्ध करने के लिए अनेक राष्ट्र आपस में लड़ पड़े जिसमें संसार पिस गया।

साम्राज्यवाद (Imperialism)

साम्राज्यवाद 19वीं शताब्दी के अंत में यूरोप के लिए एक समस्या बन गया। असल में जर्मनी और इटली के एकीकरण के पहले ही यूरोपीय राज्यों ने अपना साम्राज्य एशिया और अफ्रीका में स्थापित कर लिया था। चूँकि अब जर्मनी और इटली का भी उद्योगीकरण हो गया, अतः इन देशों के समक्ष अपने-अपने उपनिवेश कायम करने की समस्या हुई। इन देशों के उद्योगपतियों के लिए कच्चे माल लाने और तैयार माल बेचने के लिए बाजार चाहिए था। फलस्वरूप यूरोपीय देशों के बीच विभिन्न प्रदेशों को लेकर, जैसे- अफ्रीका के बँटवारे, चीन को प्रभाव क्षेत्रों में बाँटने और प्रशान्त महासागर के अनेकानेक द्वीपों पर अधिकार कायम करने इत्यादि, घोर साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा शुरू हुई। बाल्कन प्रायद्वीप में आस्ट्रिया और रूस के बीच घोर तनाव उत्पन्न हुआ जिससे स्थिति और भी भयंकर हो गई। इतना ही नहीं, उपनिवेश कायम करने के लिए जर्मनी एक मजबूत जहाजी बेड़े का निर्माण करने लगा, जिसे इंगलैंड एक खुली चुनौती समझता था, क्योंकि अभी तक इंगलैंड "समुद्र की स्वामिनी" समझा जाता था। सम्बन्धित देश के पूँजीपति चाहते थे कि उनके देश की सेना उपनिवेशों में लगी पूँजी और व्यापार की रक्षा करे। अतः अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए साम्राज्यवादी राष्ट्रों के पूँजीपति युद्ध के समर्थक बन गए। इस तरह साम्राज्यवाद प्रथम विश्वयुद्ध का एक महत्वपूर्ण कारण था।

सैनिकवाद (Militarism)

सैनिकवाद भी प्रथम विश्वयुद्ध का एक महत्वपूर्ण कारण था। गुप्त संधियों की परम्परा ने यूरोपीय देशों को अस्त्र-शस्त्र और सैनिकों की शक्ति में वृद्धि लाने के लिए प्रेरित किया।

फलतः यूरोप में शस्त्रीकरण की होड़ प्रारंभ हुई। प्रत्येक राष्ट्र ने शान्ति के नाम पर सैन्यवृद्धि की। सैन्य संगठन के बल पर ही यूरोपीय देश साम्राज्यवाद का विकास कर सकते थे। गुप्त संधियों ने शंका एवं मतभेद का वातावरण कायम कर दिया था। नतीजा यह हुआ कि अनेक यूरोपीय देशों ने अनिवार्य सैनिक शिक्षा की पद्धति प्रारंभ कर दी। यूरोप के बड़े-बड़े राष्ट्र अपनी सेना पर अत्यधिक व्यय करने लगे। फ्रांस, जर्मनी, इंगलैंड आदि देश अपनी राष्ट्रीय आय का 85% तक सैनिक तैयारियों में व्यय करने लगे। कल-कारखानों में युद्ध के औजार, बन्दूक, कारतूस, गोला-बारूद आदि तैयार होने लगे। इस तरह पूरे यूरोप में सैनिक वातावरण छाया हुआ था। ऐसे वातावरण में सैनिक अधिकारियों का स्थान देश की राजनीति में प्रमुख हो गया और वे असैनिक अधिकारियों पर हावी हो गए। उनका ध्यान केवल युद्ध पर था। वे युद्ध के लिए उतावले थे। जब भी यूरोप में कोई संकट पैदा होता, सैनिक अधिकारी असैनिक अधिकारियों पर दबाव डालते कि इन्हें जल्द से जल्द युद्ध शुरू करने की इजाजत दे दी जाय। जुलाई, 1914 में जब युद्ध का विस्फोट हुआ तो ठीक ऐसी ही स्थिति कायम हो गयी थी। उस समय यूरोपीय राज्यों के सैनिक अधिकारियों ने यदि थोड़ा भी संयम से काम लिया होता तो संभवतः युद्ध को छिड़ने से रोका जा सकता था।

समाचार पत्र (Newspaper)

समाचार पत्रों ने भी युद्ध भड़काने में काफी हाथ बंटाया। समाचार पत्रों ने बड़े देशों के जनमत को झूठे प्रचारों के द्वारा बिगाड़ डाला। ये समाचार पत्र अपना महत्व बढ़ाने के लिए सुर्खियां समाचार छापने लगे,

जिससे उग्र जनमत का उदय हुआ। विदेशों में सरलस्थिति को भी तनावपूर्ण कहकर प्रचार किया गया और शान्ति कायम करने वाले तत्वों का दमन किया गया। सत्य को झूठ और झूठ को सत्य कहकर समाचारपत्रों से जनता की मानसिक स्थिति को असंतुलित और व्यग्र बना दिया गया और देश तथा उसकी वास्तविक स्थिति का पता लगाना असंभव होगया। आस्ट्रिया और सर्बिया के समाचार पत्र अफवाहें फैलाने में सभी यूरोपीय देशों से आगे थे। इस प्रकार समाचार पत्र विभिन्न देशों में अन्य राष्ट्रों के विरुद्ध जनमत तैयार करने लगे और यह जनमत राजनीतिज्ञों को प्रभावित करने लगा।

तात्कालिक कारण (Immediate cause)

यूरोप में तनाव अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुका था। युद्ध की संभावनाएँ दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थीं एवं बाल्कन में विस्फोट के सभी चिह्न दिखलाई दे रहे थे। ऐसी परिस्थितियों में आस्ट्रिया का राजकुमार एवं सिंहासन का उत्तराधिकारी आर्कड्यूक फ्रांसीस फर्डिनंड और उसकी पत्नी की हत्या बोस्निया की राजधानी सेराजेवो में एक सर्ब द्वारा कर दी गई। यह घटना विश्व युद्ध का तात्कालिक कारण सिद्ध हुई। आस्ट्रिया की सरकार ने सर्बिया को एक अल्टीमेटम भेजा जिसमें बारह कड़ी शर्तें थीं। परिस्थिति से बाध्य होकर सर्बिया ने नौ शर्तों को अक्षरशः स्वीकार कर लिया और तीन अन्य शर्तों के सम्बन्ध में उसने कुछ आपत्ति अवश्य की किन्तु आस्ट्रिया को उनकी स्वीकृति के लिए भी आश्वासन दिया। आस्ट्रिया को इससे संतोष नहीं हुआ अतः 28 जुलाई 1914 को आस्ट्रिया ने सर्बिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इस घटना से ही प्रथम महायुद्ध का श्रीगणेश हुआ। सर्बिया की मदद में रूस तत्काल अपनी पूरी सैनिकशक्ति के साथ मैदान में आ गया। फिर जर्मनी और फ्रांस भी अपने-अपने मित्रराज्यों का पक्ष लेते हुए युद्ध में कूद पड़े।

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रथम विश्व युद्ध विश्व इतिहास की एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण घटना है। विभिन्न कारणों के चलते इसका विस्फोट 1914 ई० में हुआ। सम्पूर्ण मानव-जाति युद्ध की विभीषिका से त्रस्त हो गई। युद्ध छिड़ने के केवल दो सप्ताह के अन्दर ही सारा यूरोप युद्ध भूमि बन गया।